वर्ष 43 ■ अंक 1
नवम्बर 2024 – जुलाई 2026
संयुक्तांक मूल्य ₹200

वर्तमान साहित्य

साहित्य, कला और सोच की पत्रिका

संस्थापक संपादक : विभूति नारायण राय
सलाहकार संपादक : भारत भारद्वाज

☐ वर्ष 43 ☐ अंक 1☐ नवम्बर-2024-जुलाई 2026 (संयुक्तांक) ☐ मूल्य 200/-

RNI पंजीकरण संख्या 40342/ 83 UPHIN12563

संपादकीय कार्यालय
राजीव निकेतन 16/57 डी-10, कादीपुर, शिवपुर, वाराणसी (उ.प्र.) पिन-221003
मो. 9005484595, 9531834834
9415893480

ई-मेल :
पत्रिका के लिए- vartmansahitya2021@gmail.com
वर्तमान साहित्य notnul.com पर भी उपलब्ध है

डिजिटल प्रभार : सुनील मौर्य
रेखांकन : संदीप राशिनकर
आवरण : अंतरिक्ष

☐ वार्षिक सदस्यता 1000/- रजिस्टर्ड डाक खर्च सहित
☐ संस्थाओं व लाइब्रेरियों के लिए वार्षिक : 1440/-रजिस्टर्ड डाक खर्च सहित
☐विदेशों में वार्षिक : 100 डॉलर।
वर्तमान साहित्य के नाम से
खाता सं. : 28660200000628
IFSC :BARB0SHIVBS
बैक ऑफ बड़ौदा, शाखा-शिवपुर, जिला-वाराणसी (उ. प्र.), 221003
Google Pay **9005484595**
कृपया राशि भेजने की सूचना तत्काल ईमेल, व्हाट्सएप अथवा पत्र द्वारा अपने पते सहित भेजें।

वितरक : रुद्रादित्य प्रकाशन समूह
इलाहाबाद-2111015
फोन नं. 0532-2972226, 8175030339

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से **वर्तमान साहित्य,** संपादक मंडल या संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। संपादन एवं संचालन पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक है। सभी विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में होगा।

वर्तमान साहित्य

साहित्य, कला और सोच की पत्रिका

संपादक
संजय श्रीवास्तव

संपादक मंडल
सुरेंद्र राही
शैलेंद्र कुमार मिश्र, आनंद शुक्ल
गोरखनाथ

उप संपादक
शशि कुमार सिंह ♦ अलका प्रकाश

सह संपादक
ज्ञानचंद बागड़ी, छोटे लाल सरोज

संपादन सहयोग
इन्दु श्रीवास्तव, संजीव कुमार मौर्य
अजीत यादव

अनुक्रम

संस्मरण

- ❑ संस्मरणों का मायालोकः पुष्पा भारती -मधुरेश 09
- ❑ लखनऊ-रिवर बैंक कॉलोनी में ऐनी आपा - जेबा अल्वी 14
- ❑ यारों के यार काशीनाथ सिंह -राजेंद्र चन्द्रकान्त राय 18

सिनेमा से

- ❑ जीनियस फ़िल्मकार सत्यजित राय कभी 'ऊँचा' होना भी इंसान के लिए अजीब हो जाता है 25
  - ख़्वाजा अहमद अब्बास

लेख

- ❑ आंडाल की जादुई जीवन कथा - सुभाष राय 29
- ❑ चली कुल बोरनी गंगा नहाय....- विवेक दास 36
- ❑ प्रेमचन्द साहित्य और दलित समस्यायें - रामकली सर्राफ 38

कहानी

- ❑ कगार के आखिरी सिरे पर - प्रताप दीक्षित 46
- ❑ आग का दरिया - शिव कुमार यादव 53
- ❑ गठरी - गंगाराम राज़ी 57
- ❑ स्थायी पता -दीपक शर्मा 62
- ❑ अंजाम - सुषमा मुनीन्द्र 65
- ❑ मोरपंख - प्रवीण भारद्वाज 'बंजारा' 71
- ❑ नरेशा की अम्मा उर्फ भजोरिया - पूरन सिंह 79
- ❑ लहरिया लूटे, ए बाबा! -कृपाशंकर 84

कविताएँ

पुरु मालव 89

- ❑ भारत प्रसाद 91
- ❑ सुधांशु कुमार मालवीय 93
- ❑ पूनम सिंह 95
- ❑ राकेश रंजन 97

- ❑ वियोगिनी ठाकुर 99
- ❑ सावित्री बड़ाईक 102
- ❑ चित्रा पंवार 104
- ❑ वन्दना पराशर 105
- ❑ अवधेश प्रधान के गद्य के साथ छोटी-सी सहचर यात्रा –कर्मेन्दु शिशिर 108
- ❑ हिंदी के हिंदी होने का मतलब –विनोद शाही 123

सिनेमा से...

- ❑ अजनबी नहीं हैं साहित्य और सिनेमा के रिश्ते –अवधेश श्रीवास्तव 134

लेख

- ❑ कथेतर का रचना विधान –अरुण कुमार 139

❑ राजेन्द्र राजन : वैचारिक प्रतिबद्धता और लेखन के सेतु –चन्द्रभानु प्रसाद सिंह 143
❑ युद्ध और अशांति के इस दौर में गांधी–डा. अविनाश कुमार श्रीवास्तव 147

पत्र

❑ एन.एन.मायकोव को दॉस्तोएव्स्की का पत्र –अनुवाद- रूपसिंह चन्देल 152

कहानी

❑ अकेली औरत – सुधा गोयल 155
❑ स्पर्श -छाया श्रीवास्तव
❑ सींचना –मुकुल जोशी 158
❑ फ़ैसले की मंज़िल –फ़रज़ाना महदी 171
❑ पाण्डेय का चालीसवाँ –अभिज्ञात 176
❑ रैपर –डॉ. राम करन मिश्र 180
❑ रास्ता किधर है –रविशंकर सिंह 185
❑ आदी –राजा सिंह 188

लघु-उपन्यास

❑ उत्तराधिकारी –राजेन्द्र लहरिया 193

कविताएँ

❑ शैलेंद्र शांत 212
❑ सत्येंद्र कुमार 214
❑ अखिलेश जयसवाल 216
❑ अजय कुमार सिन्हा 219
❑ पूनम भाटिया 222
❑ नवीन माथुर पंचोली 225

कहानी

दिलचस्प और नायाब संस्मरणों की दुनिया –कमलेश भट्ट कमल 226

पुस्तक समीक्षा

❑ पहचानने की परिशुद्धता : 'हिंदी उपन्यास; सार्थक की पहचान' –धनेश दत्त पाण्डेय 230
❑ प्रश्नाकुल मन की अशान्तियाँ और 'शान्तिपर्व' –शान्ति नायर 236
❑ रंगों में जीवन का सौंदर्य और संघर्ष –रामदुलारी शर्मा 244
❑ प्रेमचंदः अतीत के झरोखे से –आनन्द शुक्ल 248
❑ गहरे इतिहास-अबोध का कवि –मयंक खरे 252
❑ कविता के कैनवास पर देश का मौजूदा नक्शा –श्री कृष्ण नीरज 255

गतिविधियाँ

❑ संध्या नवोदिता को दिया गया शीला सिद्धान्तकर कविता सम्मान 258

सम्पादकीय

हम देखेंगे.....

जागो फिर एक बार !

साधो,

लम्बी प्रतीक्षा के बाद यह अंक आपके सामने है। इसी समय नवजागरण वाले बंगाल की गौरवशाली छवि का अधःपतन भी हम देख रहे हैं। यही हाल पूरे देश और दुनिया का भी है। याद कीजिए कुछ ही साल पहले बंगाल में महाश्वेता देवी की उपस्थिति पूरे देश की शान थी। यह साल उनकी शताब्दी का है। वे लेखन के साथ ही जल, जंगल, ज़मीन की लड़ाई का जीवन्त प्रतीक थीं। उनकी चेतावनी से सरकारें सहम जाती थीं। ये था उनका लेखकीय प्रभाव।उनका सम्मान था क्योंकि वे जन बुद्धिजीवी थीं। जनता और सत्ता दोनों को सचेत करने की वे हैसियत रखती थीं। नंदीग्राम और सिंगूर के मुद्दे पर उनका प्रतिरोध सभी के ध्यान में है। इसके बाद वाम सरकार हिल गयी। लेकिन आज के हालात में यदि वे होतीं तो क्या सूरत बनती ? मुझे लगता है कि उनकी कोशिशों से बंगाल की स्त्रियां बड़े पैमाने पर लोकतंत्र में हक़दार हुईं। इसके लिए वे आगे बढ़ीं और उन सभी ने सत्ता में हिस्सेदारी की। लेकिन आज वह दौर खत्म हो गया। बंगाली मानुष के काम और व्यवहार पर तरस आ रहा है। ये मानुष इन दिनों उन्माद की लहर में बहता दिख रहा है। चैतन्य महाप्रभु और लालन शाह का बंगाल कहीं खो गया ! जाने कहां गयी बंगाल की आध्यात्मिक चेतना, बौद्धिक प्रतिबद्धता जिसने पूरे भारत को नवता का संदेश दिया था ! यहीं से स्वामी विवेकानंद आधुनिक विश्व के लिए नये मनुष्य को परिभाषित करते खड़े हुए। क्रांतिकारी कवि काजी नज़रूल इस्लाम, 'विषादसिंधु' के रचयिता मीर मोगर्रफ़ हुसैन, जसीमुद्दीन, हुमायूं अहमद की पुकार को कौन अनसुना कर रहा है ? कौन है वह जिसने साझा संस्कृति के प्रतीक बाउल गायकों की स्वर लहरियों को बाधित कर दिया ? ईश्वर चंद्र विद्यासागर, राजा राममोहन राय, माइकल मधुसूदन दत्त, विवियन डेरोजियो, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, रवींद्र नाथ टैगोर, नंदलाल बोस को हम इतनी जल्दी भूल बैठे ! इस गैरजिम्मेदाराना रवैए के लिए इतिहास हमें कभी बख़्शेगा नहीं। बंगाल का अख़बार और उससे बना समवाय जिसने पूरे देश को प्रेरणा दी, मानव-मुक्ति का मार्ग बताया -- वो विपथगामी है। ये बंगाल है जिसने हिंदी को पहला अख़बार 'उदन्त मार्तण्ड' दिया। लार्ड कर्जन के खिलाफ 'भारत मित्र' अखबार और इसके सम्पादक व निबंधकार बालमुकुंद गुप्त को दिया जिन्होंने 'शिव-शंभु के चिट्ठे और ख़त' लिख कर हिंद का इक़बाल बुलंद किया। इसी बंगाल ने भारतेंदु का लेखकीय मार्गदर्शन किया। इसके अलावा कलकत्ते में 'मतवाला' अख़बार न होता तो निराला न होते। हिन्दी की पहली कहानीकार बंगमहिला राजेन्द्र बाला घोष रहती मीरजापुर में थीं लेकिन इसी बंगाल की थीं। इस तरह बंगला का बहुत बड़ा कर्ज़ है हम हिंदी समाज के लोगों पर। यही बंगाल था जिसके साहित्य और कला का वितान आकाश को भी मात देता था। हमारे गौरव हैं महान वैज्ञानिक बोसान थ्योरी वाले डा. सत्येंद्र नाथ बोस जिनके मुरीद अल्बर्ट आइंस्टीन थे। इसी तरह सर जगदीश चन्द्र बसु और मेघनाद साहा थे जिनकी खोजों से दुनिया चमत्कृत हुई। बंगीय भद्रलोक से आने वाले सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, चितरंजन दास और सुभाष चन्द्र बोस थे जिनकी राष्ट्रीय चेतना ने स्वाधीनता आंदोलन को नयी दिशा दी। इसी तरह बनलता सेन, दुकारीबाला देवी, नलिनीबाला देबी, सुनीति चौधरी, रुकैया सखावत हुसैन, कवयित्री तोरु दत्त, कामिनी राय, सरला देवी चौधरानी, आशापूर्णा देवी, महाश्वेता देवी के साथ-साथ विश्वदृष्टि के सिने निर्देशक ऋत्विक घटक,

मृणाल सेन, विमल मित्र और सत्यजित रे का बंगाल कहीं खो गया है। दरअसल यह इस बात का सुबूत है कि भारत में नव साम्राज्यवादी संस्कृति और पतनशील लोकतंत्र ने मनुष्य की अस्मिता और उसकी सामाजिकता को ही नष्ट कर दिया है।

गौरतलब है कि यह सिर्फ बंगाल का ही नहीं, इस दुर्गति का शिकार पूरा हिंदुस्तान है। अजीब सी अशांति और फिरकापरस्ती का माहौल है। जिसे देखो वही अपने कबीले का अलमबरदार बना घूम रहा है। इन्होंने कबीले और खाप की संस्कृति को इक्कीसवीं सदी के इस दौर में अपने हक़ में जिंदा रखा है। इस खेल को हमारा मीडिया बड़ी तबीयत से पेश करता है। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण क्षण है। हकीकत ये है कि इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में खड़ा भारत अनेक विरोधाभासों का देश दिखाई देता है। एक ओर वह विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल बताया जा रहा है। दावा है कि अंतरिक्ष से लेकर डिजिटल तकनीक तक देश नई उपलब्धियाँ हासिल कर रहा है और वैश्विक मंचों पर उसकी उपस्थिति लगातार मजबूत हो रही है तथा उसकी युवा जनसंख्या उसे अभूतपूर्व संभावनाएँ प्रदान कर रही है। दूसरी ओर सामाजिक विभाजन, सांप्रदायिक तनाव, वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमी, शिक्षा की गिरती गुणवत्ता, पर्यावरणीय संकट, राजनीतिक ध्रुवीकरण और नैतिक मूल्यों के क्षरण जैसी समस्याएँ भी उतनी ही गंभीरता से हमारे सामने उपस्थित हैं। यह स्थिति हमें एक महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर ले जाती है—क्या भारत को एक और नवजागरण की आवश्यकता है? इस प्रश्न का उत्तर केवल 'हाँ' या 'नहीं' में नहीं दिया जा सकता। इसके लिए हमें इतिहास की ओर देखना होगा और समझना होगा कि नवजागरण का वास्तविक अर्थ क्या है ! नवजागरण केवल आर्थिक समृद्धि या तकनीकी विकास का नाम नहीं है। यह मनुष्य की चेतना के जागरण, समाज की बौद्धिक मुक्ति, रूढ़ियों के विरुद्ध विवेकपूर्ण संघर्ष और नई मानवीय मूल्यों की स्थापना की प्रक्रिया है। जब कोई समाज अपनी जड़ताओं को तोड़कर नए विचारों, नए ज्ञान और नई संवेदनाओं को स्वीकार करता है, तब नवजागरण जन्म लेता है। भारत ने उन्नीसवीं शताब्दी में ऐसा ही एक ऐतिहासिक नवजागरण देखा था। स्वामी विवेकानंद, राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिराव फुले, सावित्रीबाई फुले, स्वामी दयानंद सरस्वती, महादेव गोविंद रानाडे और अनेक समाज सुधारकों ने भारतीय समाज को आत्ममंथन के लिए प्रेरित किया। उन्होंने सती प्रथा, बाल विवाह, अस्पृश्यता, स्त्री-विरोधी परंपराओं और सामाजिक अंधविश्वासों को चुनौती दी। पश्चिमी शिक्षा और आधुनिक विज्ञान के प्रभाव के साथ भारतीय समाज में नए विचारों का प्रवेश हुआ। इस बौद्धिक आंदोलन ने आगे चलकर राष्ट्रीय चेतना को जन्म दिया और स्वतंत्रता संग्राम की वैचारिक भूमि तैयार की।आज परिस्थितियाँ भिन्न हैं, लेकिन चुनौती का स्वरूप कम गंभीर नहीं है। यदि उन्नीसवीं शताब्दी का नवजागरण सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों के विरुद्ध था, तो इक्कीसवीं शताब्दी का नवजागरण अज्ञान, कट्टरता, असहिष्णुता, सूचना-अराजकता और नैतिक शून्यता के विरुद्ध होना चाहिए। यह नवजागरण केवल संस्थागत सुधारों का नहीं, बल्कि मानसिकता के परिवर्तन का आंदोलन होना चाहिए।

भारत की सबसे बड़ी शक्ति उसकी युवा आबादी है। लेकिन केवल युवा जनसंख्या होना पर्याप्त नहीं है। यदि युवाओं के पास गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, वैज्ञानिक सोच, रचनात्मक अवसर और नैतिक दिशा नहीं होगी, तो यह जनसांख्यिकीय लाभांश बोझ में बदल सकता है। आज बड़ी संख्या में युवा डिग्रियाँ तो प्राप्त कर रहे हैं, लेकिन आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान और सामाजिक संवेदनशीलता जैसी क्षमताएँ विकसित नहीं हो पा रही हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं होना चाहिए; उसका उद्देश्य जागरूक नागरिक तैयार करना भी होना चाहिए। दुर्भाग्य से हमारी शिक्षा व्यवस्था अभी भी काफी हद तक परीक्षा-केंद्रित बनी हुई है। रटने की प्रवृत्ति, अंक प्राप्त करने की होड़ और प्रतिस्पर्धा का अत्यधिक दबाव विद्यार्थियों की जिज्ञासा को सीमित कर देता है। नवजागरण की पहली शर्त है कि शिक्षा व्यक्ति को प्रश्न पूछना सिखाए। जिस समाज में प्रश्न पूछने की संस्कृति समाप्त हो जाती है, वहाँ प्रगति भी रुक जाती है। विज्ञान का विकास संदेह और जिज्ञासा से होता है, अंधस्वीकार से नहीं। इसलिए भारत के नए नवजागरण का केंद्र शिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण होना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित अवधारणा नहीं है। यह जीवन जीने का तरीका है। इसका अर्थ है तथ्यों के आधार पर निर्णय लेना, तर्क को महत्व देना और किसी भी विचार को आलोचनात्मक दृष्टि से परखना। आज डिजिटल माध्यमों के विस्तार ने सूचना तक पहुँच को आसान बना दिया है, लेकिन साथ ही मिथ्या सूचनाओं और अफवाहों का प्रसार भी बढ़ा है। सोशल मीडिया के युग में झूठ कई बार सच से अधिक तेजी से फैलता है। ऐसे समय में वैज्ञानिक चेतना और मीडिया साक्षरता पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो गई है।

नवजागरण का दूसरा महत्वपूर्ण आयाम सामाजिक समानता है। भारत ने संविधान के माध्यम से समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के आदर्शों को स्वीकार किया, लेकिन सामाजिक वास्तविकता अभी भी इन आदर्शों से काफी दूर है। जाति, लिंग, धर्म और आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव विभिन्न रूपों में मौजूद है।

आर्थिक विकास के बावजूद समाज के अनेक वर्ग अवसरों से वंचित हैं। किसी भी राष्ट्र का वास्तविक विकास तभी संभव है जब उसकी प्रगति का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। स्त्रियों की स्थिति इस संदर्भ में विशेष महत्व रखती है। किसी भी समाज के विकास का सबसे सटीक मापदंड वहाँ की महिलाओं की स्थिति होती है। आज भारतीय महिलाएँ विज्ञान, राजनीति, खेल, सेना, प्रशासन और उद्यमिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त कर रही हैं। फिर भी लैंगिक हिंसा, वेतन असमानता, बाल विवाह, शिक्षा में बाधाएँ और सामाजिक पूर्वाग्रह जैसी समस्याएँ व्यापक रूप से मौजूद हैं। यदि भारत को नए नवजागरण की ओर बढ़ना है तो महिलाओं को केवल विकास की सहभागी नहीं, बल्कि नेतृत्वकर्ता के रूप में स्वीकार करना होगा। इसके साथ ही सामाजिक न्याय की अवधारणा को भी नए संदर्भों में समझने की आवश्यकता है। आज केवल पारंपरिक असमानताएँ ही चुनौती नहीं हैं, बल्कि डिजिटल असमानता, ज्ञान असमानता और अवसरों की असमानता भी तेजी से बढ़ रही हैं। जो लोग तकनीक और संसाधनों तक पहुँच रखते हैं, वे आगे बढ़ रहे हैं; जो इससे वंचित हैं, वे पीछे छूट रहे हैं। नवजागरण का अर्थ होगा कि विकास के अवसर अधिक समावेशी बनें और समाज का कोई वर्ग हाशिए पर न रह जाए। भारत की सांस्कृतिक परंपरा सदैव बहुलतावादी रही है। यहाँ विभिन्न भाषाएँ, धर्म, जातीय समूह और जीवन पद्धतियाँ सह-अस्तित्व में रही हैं। यही विविधता भारत की सबसे बड़ी पहचान है। किंतु पिछले कुछ वर्षों में सामाजिक और राजनीतिक ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी है। मतभेदों को शत्रुता के रूप में देखने की आदत विकसित हो रही है। संवाद की जगह आरोप-प्रत्यारोप और विमर्श की जगह शोर ने ले ली है। लोकतंत्र केवल चुनावों से नहीं चलता; वह संवाद, सहिष्णुता और असहमति के सम्मान पर आधारित होता है।

नवजागरण का अर्थ यह नहीं कि सभी लोग एक जैसा सोचें। इसका अर्थ है कि विभिन्न विचारों के बावजूद समाज में संवाद बना रहे। किसी भी जीवंत लोकतंत्र की शक्ति उसकी विविधता में निहित होती है। जब समाज विचारों की बहुलता को स्वीकार करता है, तभी रचनात्मकता और नवाचार का विकास होता है। इसलिए भारत के नए नवजागरण को सहिष्णुता, संवाद और लोकतांत्रिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करना होगा। इसके साथ ही हमें संस्कृति और आधुनिकता के संबंध को भी समझना होगा। कई बार यह भ्रम पैदा किया जाता है कि आधुनिकता और परंपरा एक-दूसरे के विरोधी हैं। वास्तव में ऐसा नहीं है। जो परंपरा स्वयं को समय के साथ बदलने की क्षमता रखती है, वही जीवित रहती है। भारत की सभ्यता हजारों वर्षों तक इसलिए जीवित रही क्योंकि उसने नए विचारों को आत्मसात करने की क्षमता दिखाई। नवजागरण का अर्थ अपनी जड़ों से कट जाना नहीं है; बल्कि अपनी परंपराओं की आलोचनात्मक पुनर्व्याख्या करना है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि हमें पश्चिम से विज्ञान और संगठन सीखना चाहिए, जबकि भारत की आध्यात्मिक शक्ति को भी बनाए रखना चाहिए। आज भी यह विचार प्रासंगिक है। भारत का भविष्य न तो अतीत की अंधभक्ति में है और न ही पश्चिमी मॉडल के अंधानुकरण में। उसका भविष्य अपनी परंपरा और आधुनिकता के बीच रचनात्मक संतुलन स्थापित करने में है।

इसी प्रकार आर्थिक विकास को भी मानवीय मूल्यों से जोड़ना आवश्यक है। यदि विकास केवल उपभोग और लाभ कमाने तक सीमित रह जाए, तो वह समाज में असमानता और नैतिक संकट को जन्म दे सकता है। आज दुनिया भर में उपभोक्तावाद का प्रभाव बढ़ रहा है। सफलता को धन और भौतिक उपलब्धियों से मापा जाने लगा है। लेकिन किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति केवल उसके सकल घरेलू उत्पाद में नहीं, बल्कि उसके नागरिकों की चेतना, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व में निहित होती है। भारत को जिस नवजागरण की आवश्यकता है, वह केवल आर्थिक या तकनीकी नवजागरण नहीं, बल्कि बौद्धिक और नैतिक नवजागरण है। यह ऐसा आंदोलन होना चाहिए जो व्यक्ति को अधिक संवेदनशील, समाज को अधिक न्यायपूर्ण और राष्ट्र को अधिक विवेकशील बनाए। यह नवजागरण हमें यह याद दिलाए कि प्रगति का अर्थ केवल आगे बढ़ना नहीं, बल्कि सही दिशा में आगे बढ़ना है।

आज जब भारत विश्व मंच पर एक उभरती हुई शक्ति के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर रहा है, तब यह प्रश्न और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या हमारी सामाजिक, बौद्धिक और नैतिक चेतना भी उसी गति से विकसित हो रही है जिस गति से हमारी अर्थव्यवस्था और तकनीक आगे बढ़ रही है। यदि इसका उत्तर संतोषजनक नहीं है, तो स्पष्ट है कि भारत को एक नए नवजागरण की आवश्यकता है। आज भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है सार्वजनिक जीवन में नैतिकता का संकट। शिक्षा, चिकित्सा,राजनीति, प्रशासन, व्यापार और यहाँ तक कि सामाजिक संबंधों में भी मूल्यों के क्षरण की चर्चा लगातार होती रहती है। भ्रष्टाचार केवल आर्थिक अपराध नहीं है; बल्कि यह समाज के नैतिक ताने-बाने को कमजोर करने वाला खतरनाक औजार है। जब व्यक्तिगत लाभ को सामूहिक हित से ऊपर रखा जाने लगता है, तब संस्थाओं पर लोगों का विश्वास कम होने लगता है। किसी भी लोकतंत्र की सफलता केवल संविधान और कानूनों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उन नैतिक मूल्यों पर भी